ISSN: 0973-0583

भारतीय शिक्षा का गाँधीवादी संस्करण : एनईपी 2020 का दस्तावेज

डॉ० धनंजय झा
पीएच. डी. (राजनीतिक शास्त्र एवं शिक्षा शास्त्र)
धर्मागतपुर, पिलखी मुजफ्फरपुर, बिहार

शोध सारांश

आज हम एक ऐसे पड़ाव पर खड़े हैं, जहाँ राष्ट्रीय नीति 2020 तमाम नए शैक्षिक सुधारों के साथ भारतीय विद्यार्थियों के लिए भारतीय आदर्शों और आवश्यकताओं पर आधारित शिक्षा का संकल्प व्यक्त करते हुए हमारे बीच उपस्थित हैं। जहाँ तक भारतीय आदर्शों और आवश्यकताओं पर आधारित शिक्षा की बात है, उसके स्वरूप को समझने के लिए महात्मा गाँधी के शैक्षिक दर्शन और उनकी शैक्षिक योजना के आलोक में इसे बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। क्या यह शिक्षा नीति उसी तरह के भारत की कल्पना प्रस्तुत कर रही है, जैसा महात्मा गाँधी भारत को देखना चाहते थे। क्या सर्वोदय व समग्र विकास की कोई अलग अवधारणा इसके मूल में है? कहीं समय के साथ कदमताल के प्रयास में महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण को भारत पीछे तो नहीं छोड़ता जा रहा? और अगर महात्मा गाँधी आज ही प्रासंगिक हैं तो इस शिक्षा नीति में उनके शिक्षा संबंधी विचार किस तरह प्रतिबिंबत हो रहे हैं, इन्हीं प्रश्नों के साथ प्रस्तुत आलेख में विमर्श को आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है। जहाँ तक इस नीति के लक्ष्यों और आदर्शों की बात है, ऐसा प्रतीत होता है कि इस नीति ने भारत और भारत की समस्याओं को समझने और उसके समाधान के लिए महात्मा गाँधी की दृष्टि को प्रासंगिक और महत्वपूर्ण माना है और उसे ही आधार मानकर भारत के भविष्य को देखने का प्रयास किया है।

कुंजी शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सर्वोदिय, समग्र विकास, दस्तावेज आदि

प्रस्तावना :

शिक्षा किसी भी समाज के सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है साथ ही यह सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन भी है। हालांकि यह हमारा सौभाग्य रहा है कि शिक्षा के मामले में भारत का इतिहास बड़ा ही गौरवशाली रहा है, जहाँ सभ्यता के प्रारंभ से ही शिक्षा के प्रति एक अद्‌भुत प्रेम देखने को मिलता है। शिक्षा के प्रति अपने समर्पण की उदात्त परंपरा के लिए पहचाने जाने वाले वैदिक काल के गुरुकुलों में आज तक के अपने सफर में शिक्षा व्यवस्था तमाम, उतार-चढ़ावों की साक्षी भी रही है। आज हम एक ऐसे पड़ाव पर खड़े हैं, जहाँ एक नई राष्ट्रीय नीति तमाम नए शैक्षिक परिवर्तनों व सुधारों की मुनादी कर रही है। यह शिक्षा नीति भारत के लोगों के लिए भारतीय आदर्शो और आवश्यकताओं को केन्द्रित शिक्षा की बात करती रही है। ऐसे में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि क्या वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, सुगम्यता की समता की, गुणवता की, वहनीयता की जवाबदेही की हमारी लड़ाई को गति दे पाएगी? क्या यह सतत और समग्र विकास की लोक केंद्रित अवधारणा को एक सशक्त और ठोस आधार दे पायेगी?

गाँधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन

गाँधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात प्रान्त के कठियावाड़ा के पोरबन्दर नामक स्थान में हुआ था। उनकी माता का नाम पुतलीबाई और पिता का नाम करमचंद गाँधी था। उनके पिता पोरबन्दर, राजकोट के दीवान थे और माँ एक धार्मिक पारिवारिक महिला।[1] समस्त पारिवारिक वातावरण में परिवरिश की छाप गाँधीजी के व्यक्तित्व पर जीवन भर रही। वे खुद इस बात को स्वीकार करते थे कि उनका व्यक्तित्व उनके परिवार उनके माता-पिता का प्रतिबिम्ब है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लिखा है-'जिस प्रकार बच्चों को माता-पिता की शक्ल-सूरत विरासत में मिलती है, उसी प्रकार उनके गुण-दोष झूठी विरासत में मिलते हैं। अपने ही आस-पास के वातावरण के कारण इनमें अनेक प्रकार की घट-बढ़ होती है। पर मूल पूँजी तो वही होती है जो बाप-दादा आदि से मिलती है।[2] गाँधीजी को अपने माता-पिता और बाप-दादा से अपने चरित्र व आदर्श व्यक्तित्व की विरासत प्राप्त हुई थी, जिसने आगे

चलकर घने वृक्ष के रूप धारण कर पूरे भारत देश को ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व एक शीतल छाँव प्रदान की।[3]

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के रूप में राष्ट्र के समक्ष एक ऐसा व्यक्तित्व उपस्थित होता है जो स्वयं को अपने अनुभव से निरन्तर मांगता रहा और परिष्कृत करता रहा। देशी विदेशी प्रभावों से टकराते हुए अपना मार्ग स्वयं चुना और उस पर निर्भर होकर चला। पूरी तरह स्वदेशी और भारतीय होने पर भी सार्वभौमिक आकर्षण वाला यह व्यक्तित्व अपनी संकल्लित रचना में जितना ही सरल लगता है उतना ही जटिल भी है। शायद ही किसी को विश्वास हो कि कृशकाय और शर्मिली बालक मोहन इतनी उर्जा वाला हो जाएगा जिसके सम्मुख तपा हुआ साम्राज्य भी घुटने टेक देगा। घोर कलियुग में सत्य मार्ग के इस अन्वेषी याजी ने आत्मबल से शास्त्र बल को परास्त करने का जो पराक्रम कर दिखाया वह अभूतपूर्व है।[4]

गाँधी अपनी आत्मकथा को 'सत्य के प्रयोग' के रूप में प्रस्तुत करते हैं और अपने जीवन को खुली किताब कहते हैं। उनकी आत्मकथा उनके द्वारा किये गये प्रयोगों का लेखा-जोखा है। उन्होंने राजनैतिक प्रयोग भी किये और आध्यात्मिक भी। गाँधी जी में ही वह साहस था जो यह कह सके कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।

भारत आकर देश भर में पर्यटन कर गाँधी जी ने जमीनी हकीकत को समझा और फिर आरम्भ हुआ एक अविराम संघर्षशील जीवन जिसने अपने समय के भारतीय समाज को विचार और कर्म की एक नई राह दिखाई। उस राह पर खुद चलते हुए वे सबको साथ ले चले। सत्य को पाने के लिए अहिंसा या प्रेम के मार्ग को अपनाना उनका एक वैचारिक आविष्कार था। इसे आम आदमी के साधारण जीवन में अपनाने का व्यावहारिक कार्यक्रम उन्होंने प्रस्तुत किया। खुद सेवा द्वारा नेतृत्व का ऐसा मॉडल प्रस्तुत किया जिसकी कोई काट नहीं थी और जाति,धर्म, क्षेत्र, भाषा के भेद भूल कर पूरा देश उनके साथ जुट गया। उनकी साख और प्रामाणिकता के सात्विक सम्मोहन ने अशिक्षित, गंवार, गरीब, स्त्री, पुरुष हर किसी का दिल जीत लिया। उनकी स्वीकार्यता का क्रमशः विस्तार होता गया और गाँधी जी अन्याय, शोषण और अत्याचार के विरोध के पर्याय हो गए। चम्पारण में निलहे किसानों के दुःख-दर्द को संभालने और प्रतिकार करने से जो गाँधीगिरी शुरू हुई वह फिर कहीं रूकी नहीं। आत्मिक बल (सेवा फोर्स) के आगे सत्ता और साम्राज्य का बल न ठहर सका।[5] गाँधी जी ने लोक-संग्रह करते हुए ऐसा धर्म युद्ध छेड़ा जिसमें पक्ष और विपक्ष दोनों के हित को मानवीय जीवन मूल्यों के तराजू पर तौला गया। गाँधी जी की भाषा सार्वभौमिक मनुष्यता की भाषा होती है जो सबको सम्बोधित करती है। वह अकुंठ भाव से विरोधीसमेत सबके हित की चिंता करते है। गाँधी जी की कृतज्ञता, क्षमाशीलता और संवेदना ने अंग्रेजों को भी प्रभावित किया और अनेक अंग्रेज भी उनके मित्र हो गए।

गाँधीजी का जीवन सचमुच प्रयोगों से भरा था जिसमें तमाम नए विचारों, पद्धतियों और समाधन-शैलियों को जाँचा, परखा और उपयोग में लाया गया। वास्तविक जीवन में इतने विविध प्रकार के प्रयोग करना सामान्य आदमी के बस का नहीं है। राजनैतिक नेतृत्व के बहु आयामी व्यक्तित्व के स्वामी इस महापुरुष ने अनिकेत हो कर क्या कुछ नहीं किया। उनके द्वारा संपादित किए गए कामों की सूची लम्बी है और परिधि वयापक। वह एक समर्थ भारत के लिए जरूरी सामाजिक परिवर्तन के लिए एक युद्धरत स्वप्नदर्शी की चेष्टाएं है। गाँधी जी अनेक मोर्चों पर काम करते रहे और उनकी विविधता चकित करने वाली है। सत्याग्रह, आत्म-शुद्धि के लिए उपवास, नियमित मौन व्रत, सविनय अवज्ञा, हरिजन-सेवा, सफाई कार्यक्रम, अस्पृश्यता निवारण, समाचार पत्रों (यंग इंडिया, इंडियन ओपिनियन, नव जीवन) का सम्पादन और प्रकाशन, युद्ध में भागीदारी, अनेक अवसरों पर गिरफ्तारी और फिर लम्बा कारावस, नई तालीम शिक्षा पद्धति का विकास, दक्षिण अफ्रीका तथा भारत में आश्रमों का निर्माण, राष्ट्रीय कांग्रेस सहित अनेक संस्थाओं का आयोजन, चरखे का उपयोग, प्राकृतिक चिकित्सा, खादी-निर्माण की मुहिम, ब्रह्मचर्य का अभ्यास, शरीर-श्रम (प्रतिदिन औसतन 18 किलोमीटर की यात्रा) स्वाध्याय, प्रार्थना, गीता पर भाष्य-लेखन, व्याख्यान, पत्रों और अन्य पुस्तकों को लेखन आदि अनेक काम करते हुए कर्मयोगी गाँधी हमारे सामने एक ऐसा मानक रखते हैं जिसकी कोई सानी नहीं है।[6] श्रेष्ठता आत्म नियंत्रण और त्याग के कारण है। मनुष्य को ईश्वरीयुक्त प्रवृत्तियों को बढ़ाने और पशुवृत्तियों को दबाने में कुशलता चाहिए। शरीर, मन और आत्मा यदि लय में न रहें तो मानव कल्याण में आगे नहीं बढ़ेंगे। इसे ध्यान में रखकर गाँधी जी प्रार्थना को भी विशेष महत्व देते

थे उनके विचार में ईश-स्मरण से हृदय की शुद्धि होती है तथा कायरता और दूषित प्रवृत्तियों से मुक्ति मिलती है। वे कहते हैं-जैसे शरीर के लिए आहार चाहिए वैसे ही आत्मा के लिए प्रार्थना आवश्यक है। इस प्रकार महात्मा गाँधी का पावन जागरण हम सबके लिए जीवन में पाथेय का काम करेगा।[7]

शिक्षा के सम्मुख मैकालियन शिक्षा पद्धति को चुनौती और महात्मा गाँधी

जब भारतीय आदर्शो और आवश्कयताओं पर केंद्रित शिक्षा की बात की जा रही है तो उसे समझने के लिए सबसे अच्छा माध्यम भारतीयता के सबसे बडे प्रतीकों में शामिल रहे महात्मा गाँधी हो सकते हैं। उनके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि भारतीय विद्यार्थियों के लिए भारतीय आदर्शो और आवश्यकताओं पर आधारित शिक्षा का स्वरूप क्या हो सकता है? महात्मा गाँधी की शिक्षा संकल्पनाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए 1835 में प्राच्य प्रतीची विवाद की पृष्ठभूमि में लॉर्ड मैकाले और विलियम बेंटिक ने अपनी शिक्षा नीति के माध्यम से भारत और भारतीय ज्ञान परंपरा से भिन्न पूरे राष्ट्र की शिक्षा परंपरा को ही बदलने के प्रयास को भी समझना होगा। बड़े ही कपटपूर्ण ढंग से लॉर्ड मैकाले ने सा विद्या या विमुक्तये वाली शिक्षा को क्लर्क नियुक्त बना दिया। वह शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय मानस को उसकी संस्कृति, उसकी जड़ो से काट देना चाह रहा था। उसने कलकता से अपने पिता को पत्र लिखा कि यदि हमारी शिक्षा योजना जारी रह गयी तो आने वाले तीस वर्षो में बंगाल के संभ्रात वर्ग में कोई मूर्तिपूजक नहीं बचेगा, लेकिन भारत की विशेषता रही है कि इसने राजनैतिक आक्रमणों का भले सशक्त प्रतिकार न किया हो पर जब भी सांस्कृतिक आक्रमण होता है तब वह सभक्त प्रतीकार करता है।[8] वह शिक्षा के माध्यम से पूरे भारतीय मानस को उसकी संस्कृति से प्रतिकार करता है। लॉर्ड मैकाले की सांस्कृतिक विजय यात्रा की कलकत्ता के दक्षिण में ही एक सामान्य से दिखने वाले संत रामकृष्ण परमहंस ने ही रोक दिया। उस संत ने काली की एक मूर्ति के प्रति कलकत्ता या बंगाल ही नहीं बल्कि पूरे भारत की आस्था इतनी गहरी कर दी कि मैकाले की दम्भोक्ति ने कलकत्ता में ही दम तोड़ दिया। रामकृष्ण एक संत थे, उनकी भाषा बड़ी सहज और अनगढ़ थी, वे मूलतः अनुभूतियों के व्यक्ति थे।[9] लेकिन बाद में विवेकानन्द ने उनकी अनुभूतियों को बौद्धिक स्वरूप प्रदान किया वे पश्चिमी बुनियादी की चुनौती का सामना भी करते हैं और भारतीय गौरव की स्थापना भी।

हालाँकि, रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद जी का कार्य सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में था इन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से भारतीयों में जो गौरव और आत्मविश्वास का संचार किया, उससे राजनीति के धरातल पर जब गाँधी मुखर होते हैं, तो भारतीयता के प्रतीक बन पूरे ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दे देते हैं। मैकाले को भी अगर किसी ने सीधी चुनौती दी तो वह गाँधी ही थे। गाँधी बिना किसी हिचकिचाहट के सीधे कह देते थे कि मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद तैयार की वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी।

1927 में साइमन कमीशन के तहत शिक्षा संबंधी सुझाव हेतु ढाका विश्वविद्यालय के कुलपति फिलिप हटांग की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। गोलमेज सम्मेलन में इसी समिति के सुझावों पर चर्चा हो रही थी। वहाँ गाँधी ने यह आरोप लगाया कि ब्रिटिशर्स की उपस्थिति से भारत में शिक्षा के क्षेत्र में काफी गिरावट आई है, अंग्रेजों ने भारत में शिक्षा के रमणीय वृक्ष को नष्ट करने का काम किया है। उन्होंने कहा ब्रिटिश सरकार की नीतियों ने भारत की बुद्धि, विवेक, ज्ञान और शिक्षा के स्रोत को समूल नष्ट कर दिया है। भारत में अंग्रेजों के आने के बाद शिक्षा की जो स्थिति है, उससे बेहतर तो अंग्रेजों के आने के पूर्व ही थी। इसके पहले 1911 में गोपाल कृष्ण गोखले केंद्रीय धारा सभा में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रस्ताव ला चुके थे, जिसे वहाँ बहुत से भारतीयों का भी समर्थन नहीं मिला था। उनका मानना था कि इतने विशाल देश में सभी को शिक्षा दे पाना ब्रिटिश सरकार के लिए संभव नहीं है। महात्मा गाँधी इस चुनौती को स्वीकार कर लेते हैं। सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन जैसे गैर परंपरागत तरीकों के अन्वेषक महात्मा गाँधी एक अद्भूत शिक्षा योजना प्रस्तुत कर देते हैं, जो न केवल निःशुल्क और अनिवार्य है। बल्कि बेरोजगारी के खिलाफ बीमा करते हुई प्रतीत होती है।[12]

महात्मा गाँधी की शैक्षिक योजना और इनईपी 2020

महात्मा गाँधी ने 1937 में वर्धा में शिक्षा-शास्त्रियों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें

उनके शैक्षिक विचारों पर व्यापारक विमर्श के उपरांत एक शैक्षिक योजना को मूर्त रूप दिया गया। इस शैक्षिक योजना में वे 7 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को उनके वातावरण से संबंधित किसी शिल्प के माध्यम से मातृभाषा में अनिवार्य और नि:शुल्क शिक्षा दिये जाने की बात करते है। दुनिया के इतिहास की यह पहली ऐसी शिक्षा योजना है जो पूरी तरह स्वावलंबी की एक आत्मनिर्भरता है। श्रम की हेय दृष्टि से देखने के कारण भारत की सामाजिक व्यवसथा को बहुत गहरी चोट लगी थी। महात्मा गाँधी श्रम की महत्ता स्थापित कर अपनी शिक्षा योजना से स्वावलंबन की भी बात करते हैं और एक समतावादी समाज की स्थापना को संकल्पित भी करते हुए दिखाई पड़ते हैं। विद्यार्थी को उसके वातावरण से संबंधित किसी भी शिल्प की शिक्षा उसकी मातृभाषा में देकर न केवल विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाते हैं, बल्कि उसे उसकी संस्कृति से भी जोड़ने का काम करते हैं। समता, श्रम की महत्ता, स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान, बुनियादी साक्षरता और कौशलों के माध्यम से स्वावलंबन थे सभी इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांत हैं।[13]

महात्मा गाँधी, शिक्षा में बड़ा अभिनव प्रयोग करते हैं। इस बात को भली-भाँति समझे जाते हैं कि भारत की बदहाली का, गरीबी का, गुलामी का सबसे बड़ा कारण अंग्रेजी शासन द्वारा लोगों से उनका व्यवसाय छीन लेना रहा है। मूलत: अंग्रेज भारत में यहाँ की आर्थिक समृद्धि से आकर्षित हो व्यापार के लिए आए थे। लेकिन यहाँ के शासक बनते ही उन्होंने यहाँ की तकनीकी कुशलता को नष्ट करना शुरू कर दिया और कच्चे माल पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। ब्रिटिश नीतियों का परिणाम यह हुआ कि भारत के कुटीर उद्योग एकदम समाप्त से हो गए। बेरोजगार आबादी मजबूरी में मजदूरी या छोटे मोटे कामों के लिए शहर में आने लगी। अग्रेजों की नीतियों से ही एक बड़ी आबादी गरीब और कमजोर होती चली गई है। महात्मा गाँधी इस पूरे दुष्चक्र को समझ रहे थे। उन्हें लग गया कि भारत की असली सभ्यता भारत के कुटीर उद्योगों की समाप्ति और लोगों की बेरोजगारी है। वे शिक्षा को ब्रिटिश दुष्चक्र और उससे उपजी गरीबी व बेरोजगारी से मुक्ति के माध्यम के रूप में चुने उसके उद्देश्यों के फलक को विस्तृत भी कर रहे थे और उसे राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के रूप में भी देख रहे थे। महात्मा गाँधी ने इसलिए अपनी शिक्षा योजना में मृतप्राय हो चुके भारत के कुटीर उद्योगों को शिक्षा से जोड़कर उसे जीवशक्ति प्रदान करने का प्रयास किया और इसी माध्यम से बेरोजगारी से लड़ने का एक विकल्प भी प्रस्तुत किया। भारत से पहले व्यावसायिक शिक्षा गुरुकुलों से अलग परिवारों और जातियों में सीमित थी। महात्मा गाँधी एक नया प्रयोग करते है, व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत कर देते हैं। वे कहते हैं कि ऐसी शिक्षा जो चित्त की शुद्धि न करे, निर्वाह का साधन न बनाये, स्वतंत्र रहने का सामर्थ्य न दे उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता व भाषा पाण्डित्य हो वह सच्ची शिक्षा नहीं। महात्मा गांधी विद्यार्थियों के वातावरण से संबंधित किसी शिल्प के केन्द्र में रखकर विद्यार्थियों को शिक्षा देन की योजना प्रस्तुत कर देते हैं।[14]

आज हमलोग के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस विषय पर महत्वपूर्ण पहल हुई है। यह नीति स्थानीय परिवेश और उसकी आवश्यकताओं से जुड़े कौशलों से संबंधित क्रियाकलापों के माध्यम से अनुभव आधारित अधिगम की बात कर रही है। इसके लिए यह प्रत्येक विषय में इन क्रियाकलापों को एकीकृत करने हेतु कार्ययोजना बनाने की बात पर बल दे रही है। इस शिक्षा नीति में 2025 तक 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा देने की बात की गयी है। इसमें माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक विषयों में व्यावसायिक शिक्षा देने की बात की गयी है। इसमें माध्यमिक स्कूलों के शैक्षणिक विषयों में व्यावसायिक शिक्षा की एकीकृत किए जाने की भी बात की गयी है। कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए 10 दिन की बस्ता रहित कक्षा की बात की गयी है, जिसमें विद्यार्थियों को व्यावसायिक कौशलों के प्रशिक्षण देने की बात की गयी है। विद्यार्थियों में व्यावसायिक समझ बढ़ाने के लिए उन्हें अवकाश के दिनों में स्थानीय कौशलों को सीखने के अवसर उपलब्ध कराने की बात भी इस नीति में की गयी है। जिससे विद्यार्थी मुख्यधारा की शिक्षा के साथ कौशल विकास में भी संलग्न हो पाएँगे और प्रयास यह है कि वे कम से कम एक व्यवसाय से जुड़े कौशलों को सीखलें। इससे उन्हें रोजगार भी मिलेगा, श्रम की महत्ता भी स्थापित

होगी और भारतीय कलाओं से वे जुड़कर उसको संरक्षित भी कर पाएँगे। पारंपरिक और व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत कर व्यावसायिक शिक्षा के अनुक्रम और उस तक विद्यार्थियों की पहुँच बढ़ाने का प्रयास इस शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा का उद्देश्य न केवल संज्ञात्मक विकास बल्कि चरित्र निर्माण और 21वीं शताब्दी के मुख्य कौशलों से विद्यार्थियों को सुसज्जित करना भी है।[15] राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् को यह जिम्मेदारी दी गयी है कि वे इससे संबंधित क्रियाकलापों को पाठ्यचर्चा का हिस्सा बनाने की कार्ययोजना तैयार करे।[2]

गौरतलब है कि महात्मा गाँधी अपनी शैक्षिक योजना में प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कम से कम लिखने, पढ़ने और गणना के योग्य बना देना चाहते हैं। जीवन की आवश्यकताओं से संबंधित किसी शिल्प को सीखते हुए उसी से संबंधित जानकारी को पढ़ना, लिखना और गणना करना, जो सीखने की पूरी प्रक्रिया को बोझिल होने से बचा लेता है। लेकिन आज वर्तमान में स्थिति यह है कि असर (2018) के सर्वेक्षण बताते हैं कि हमारी शिक्षा व्यवस्था अभी तक प्राथमिक स्तर के सभी बच्चों को मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान भी नहीं दे पा रही है। अर्थात् ऐसे बच्चों में पढ़ने, समझने और अंकों के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव करने की क्षमता भी नहीं है।[16] राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने समस्या और उसके कारणों की पहचान कर साक्षरता और संख्या ज्ञान को मूलभूत कौशल मानते हुए रूचिकर ढ़ंग से और विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाते हुए इस कौशल का ज्ञान कराने पर बल दिया है। इस नीति की सर्वोच्च प्राथमिकता कक्षा 3 तक के प्रत्येक विद्यार्थी की मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त कराना है और इसे सीखने की आवश्यक शर्त मान इसे एक राष्ट्रीय अभियान बनाने की जरूरत महसूस की गयी है। यह नीति बच्चे के विकास लिए आवश्यक मूलभूत कौशलों की प्राप्ति के लिए एक बेहतर स्थिति की तरफ बढ़ने की संकल्पित प्रतीत हो रही है, जो महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा के लक्ष्यों का ही वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप अनुकूलन है।[17]

गाँधी, ज्ञान के अनुशासनिक वर्गीकरण से बाहर खींच उसे समग्रता में लेते हुए, रोजमर्रा के अनुभवों से जोड़ते हुए विद्यार्थियों को सिखाना चाहते हैं। वे ज्ञान के विभिन्न पक्षों में आपस में संबंध स्थापित करते हुए बच्चों का वातावरण से संबंधित किसी शिल्प को केंद्र में रखकर समवाय (सहसंबंध) पद्धति द्वारा शिक्षा देने की बात करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी इन्हीं शैक्षिक आदर्शो व मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को सुनिश्चित करने वाली समग्र शिक्षा पर बल दे रही है।

गाँधी का भाषा चिन्तन नीति और एनईपी 2020

यह शिक्षा नीति स्पष्ट रूप से अपने आधार सिद्धांत में कहती है कि विभिन्न अनुशासनों के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर क्रियाकलापों के बीच, व्यवसायिक और परंपरागत शैक्षिणक धाराओं के बीच कोई स्पष्ट अलगाव न हो, जिससे ज्ञान क्षेत्रों के बीच की पारस्परिक दूरी और असंबद्धता को दूर किया जा सके। यह शिक्षा नीति फाउण्डेशनल और प्रिपरेटरी स्टेज पर गतिविधि आधारित अध्ययन के प्रोत्साहन पर बल देती है, जिसके माध्यम से बच्चों में नैतिक गुणों स्वच्छता, सहयोग आदि आदतों का विकास किया जाना है। इसके साथ ही विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से ही पढ़ने, लिखने, बोलने, कला, भाषा, विज्ञान, गणित, शारीरिक स्वास्थ्य जैसे विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। मिडिल स्टेज की तीन वर्ष की शिक्षा में विषयों का स्पष्ट विभाजन तो हो जाएगा और उनकी अमूर्त अवधारणाओं पर काम शुरू होगा लेकिन तब भी शिक्षा अनुभव आधारित होगी और विषयों के मध्य पारस्परिक संबंध देखने पर बल दिया जाएगा। शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को रटने की प्रथा से मुक्ति दिलाते हुए संज्ञानात्मक समझ, चरित्र निर्माण और व्यवसायिक कुशलता की ओर ले जाना है।[18]

इस नीति में बच्चों को विषयों में बाँधने से बचाने की महत्वपूर्ण वकालत की गयी। यह शिक्षा नीति बहु-विषयक और लचीली शिक्षा की बात कर रही है। इसमें बच्चे को अपनी पसंद के विषयों को पढ़ने की पूरी छूट है, जिससे बच्चे किसी वस्तु या घटना से संबंधित सभी पक्षों का ज्ञान अलग-अलग विषयों के माध्यम से प्राप्त कर ज्ञान उस वस्तु या घटना की व्यापक समझ विकसित कर सकते हैं। इस तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गाँधी का एक स्पष्ट और विराट प्रतिबिंबित दिख रहा है।

यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों को स्थानीय संदर्भो से जोड़ने के प्रयास करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्यों आदर्शो, साहित्य, कला, संस्कृति के प्रति खुले रूप

में अपना लगाव दिखा रही है और विद्यार्थियों को इससे जोड़ने के लिए कार्ययोजना बनाने की बात कर रही है। यह शिक्षा नीति बहुत महत्वपूर्ण पहल करते हुए सीखने में मातृभाषा के महत्व को केवल वकालत भी कर रही। यह शिक्षा नीति इस बात पर देश वशेष जोर दे रही है कि बच्चे के बौद्धिक व सृजनात्मक क्षमता के विकास के लिए मातृभाषा में शिक्षा आवश्यक है। साथ ही अंग्रेजी भाषा के समर्थन में दिए जा रहे तकों का उत्तर देते यह भी कह रही कि दूसरी भाषा को सीखने के लिए यह आवश्यक नहीं कि उस भाषा को शिक्षा का माध्यम ही बनाया जाए। उसे एक विषय के रूप में अध्ययन कर भी सीखा जा सकता है। महात्मा गाँधी की बात की जाए तो वह जिस दौर में अपनी शिक्षा योजना प्रस्तुत कर रहे थे, वह दौर ही अंग्रेजी का था। शिक्षा का पर्याय ही अंग्रेजी शिक्षा थी। लेकिन महात्मा गाँधी जिस तरह से भारत की आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का कारण कुटीर उद्योगों की समाप्ति मानते हैं, ठीक उसी तरह से अपनी भाषाओं की उपेक्षा व उसमें अलगाव को भी तमाम सांस्कृतिक, राजनीतिक व शैक्षिक समस्याओं का कारण मानते हैं।[19]

उल्लेखनीय है कि भाषा अपने समाज की संस्कृति की वाहक होती है। विलियम जोन्स ने जिस संस्कृत को ग्रीक से अधिक परिपूर्ण और लैटिन से अधिक समृद्ध और इन दोनों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और मनोहारी माना। जिस संस्कृत में ज्ञान का विपुल भण्डार है, जो भाषा आज भी सर्वाधिक वैज्ञानिक मानी जाती है व कम्प्यूटर तक के लिए सबसे उपयुक्त मानी गयी, उसे भी उपेक्षित किया जाना भारतीयों द्वारा खुद के साथ किया गया एक बड़ा अपराध है। यह शिक्षा नीति संस्कृत के संरक्षण के प्रयासों पर बल देने की बात कर रही है। जो भारतीय ज्ञान के संरक्षण की दिशा में एक सार्थक पहल है।[20]

आज के वैज्ञानिक युग में हम वैज्ञानिक अनुसंधानों में दुनिया के देशों से पिछड़ रहे हैं इसका एक कारण यह भी है कि हम अपने अपने प्राचीन ज्ञान से न अपने को जोड़ पा रहे हैं और न ही उससे प्रेरणा ले पा रहे हैं, क्योंकि इसमें भाषा एक अवरोधक के रूप में सामने उपस्थित है। यही दूसरी तरफ अपनी मातृभाषा में शिक्षा न लेना भी हमारी बौद्धिक विफलताओं का कारण है। दुनिया के तमाम मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मातृभाषा में शिक्षा देना विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में हम विषयवस्तु को ज्यादा बेहतर ढंग से समझ सकते है। यही कारण है कि दुनिया के अधिकांश विकसित देश मातृभाषा में ही शिक्षा प्रदान करते हैं। भारत में भाषाओं की एक समृद्ध परंपरा रही है और सुदृढ़ नीव भी फिर भी हम अपनी भाषा से विमुख हो अपनी बौद्धिक क्षमता और अपनी संस्कृति की कीमत पर अपनी शिक्षा जारी रखी हुए हैं लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शास्त्रीय और मातृभाषा को शिक्षा के केंद्र में लाने का प्रयास कर पूरी शैक्षिक संरचना को ही नया कलेवर देने का सकारात्मक प्रयास किया है।[21] यदि इसे वास्तविक धरातल पर अमली जामा पहना दिया गया तो निश्चित ही भारत में शिक्षा और उसके माध्यम से नवीन ज्ञान के विकास हेतु अनुसंधानों के स्तर में बहुत गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिलेगा।

वस्तुतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा, कला, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, भाषा, प्राचीन, वाड्मय, शिल्प और इन सभी को शिक्षा से जोड़कर व उनके संरक्षण, संवर्धन और आने वाली पीढ़ियों को स्थानान्तरण की बात करती है। यह शिक्षा नीति भारतीय समस्याओं की जड़ों को खोजते व उनका समाधान भारतीय संदर्भों के साथ करने का प्रयास कर रही है, और ऐसी ही महात्मा गाँधी की भी भावना थी।[22]

निष्कर्षः

उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर मुझे यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों को अपने-आप में समेटे हुए हैं। चाहे हम शिक्षा को रोजगारपरक बनाने की बात करें या मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की या फिर बच्चों में मूलभूत कौशलों के विकास की बात करें इन सभी विषयों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर महात्मा गाँधी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा है। महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा का भी सर्वाधिक जोर इन्हीं बातों पर था। समता, श्रम की महत्ता, स्थानीय परिवेश से जुड़ाव ज्ञान की अखंडता, बुनियादी साक्षरता और स्वावलम्बन-ये सभी इस नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धान्त है। इस शिक्षा नीति में इन निर्धारित आदर्शों को प्राप्त करने हेतु विषयगत, प्रक्रियागत और संरचनागत बदलावों और शैक्षिक विसंगतियों, समस्याओं के साथ जूझने का संकल्प दिख

रहा है। निश्चित ही यह शिक्षा नीति भारत के भविष्य का निर्धारण करने वाली एक महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होगी। आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस तरह इस दस्तावेज के माध्यम से भारत की शैक्षिक समस्याओं की जड़ में जाने व उसका समाधान खोजने का प्रयास किया गया है, उसी तरह से इस नीति के क्रियान्वयन के स्तर पर भी गंभीरता दिखाई जाएगी। शिक्षा से जुडे लोगों की इसके क्रियान्वयन के प्रति दृढ़ संकल्प शक्ति बनी रही तो यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निश्चित ही भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा देने में मील का पत्थर साबित होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कुलकर्णी सूचिता गाँधी (2009) महात्मा गाँधी मेरे पितामह (व्यक्तित्व और परिवार), किताब घर प्रकाशन नई दिल्ली-पृ0-47
2. मोहन दास करमचंद गाँधी (2006), मेरे सपनों का भारत, पूर्व सन्दर्भित, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, पृ0-255
3. मोहन दास करमचंद गाँधी (2008), सत्य के प्रयोग, आई एक्सपोर्ट मेन्टल विद टुथ का हिन्दी अनुवाद : राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली पृ0-13
4. मिश्र गिरीश्वर (2022) "स्वयंभू भारतीय मानस के प्रतिमूर्ति", मंगल प्रभात को प्रतीक्षा में, सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली पृ0-47
5. वही/उपरोक्त पृ0-48-49
6. वही/उपरोक्त पृ0-49-50
7. वही/उपरोक्त पृ0-52
8. ट्रेवेल्ययान जी0ओ0, 1989, द लाईफ एण्ड सेन्टर्स ऑफ लॉर्ड मैकाले लॉगमन्स, ग्रीन एण्ड कम्पनी, लन्दन।
9. दिनकर , रामधारी सिंह 1956, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारत प्रकाशन इलाहाबाद
10. गाँधी मोहनदास करमचंद, 1909, हिन्द स्वराज, (अनुवादक-अमृतलाल ठाकेर दास न्यायवटी), सर्व सेवा संघ, वाराणसी
11. धर्मपाल, 1983,' द स्कूटीफुल ट्री' : बिब्लिया कम्पेक्स प्रा0लि0, नई दिल्ली।
12. श्रीवास्तव रश्मि, महात्मा गाँधी का शिक्षा चिन्तन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, नई दिल्ली (2019)
13. उद्धृत, शिवदत्त, नयी तालीम शिक्षण पद्धति ब्रर्नाट उसकी वैज्ञानिकता, बुनियादी तालीम (सं0 अरविन्दनाक्षण, एन कुमार मिथिलेश) राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
14. जोशी शम्भु, नयी तालीम, बुनियादी तालीम (सं0 अरविन्दाक्षण ए0 मिथिलेश) राजकुमार प्रकाशन, नई दिल्ली-2013
15. प्रो0 चन्द्रकान्त एस0 रागीट, "ग्राम केन्द्रित कौशल एवं उद्यम,संकल्पित प्रो0 मनोज कुमार (सं0) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 क्रियान्वयन के सूत्र, महात्मा गाँधी स्ट्रीम विश्वविद्यालय 2020 पृ0 233-244
16. असर 2018 एनूअल स्टेटस ऑफ रिपोर्ट असर सेन्टर नई दिल्ली
17. पूर्वोक्त पृ0 239
18. प्रो0 प्रीति सागर, "मातृभाषा, शिक्षण प्रो0 मनोज कुमार (सं0) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 क्रियान्वयन के सूत्र, महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय या हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 2020
19. उपरोक्त पृ0-19-23
20 उपरोक्त पृ0-23-24
21 उपरोक्त पृ0-25-26
22. डॉ० कृष्णचन्द्र पाण्डेय, "सांस्कृतिक विधाएँ", संकल्पित प्रो0 मनोज कुमार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 क्रियान्वयन के सूत्र, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 2020,पृ0-121-131

❖❖❖